मानव तस्करी के पीड़ितों के लिए
अन्तर्राष्ट्रीय प्रार्थना दिवस 2023

अन्तर्राष्ट्रीय
समाजिक न्याय कमीशन
मुक्ति फौज

मैंने उनका रोना सुन लिया है।

वयस्क प्रचार संसाधन

कमिश्नर प्रेमा विल्फ्रेड (रिटायर) द्वारा लिखित
दक्षिण पश्चिमी भारत टैरिटरी

'इस्राएली गुलामी के मध्य कराहते, और चिल्लाते थे। गुलामी में मदद के लिए उनकी पुकार परमेश्वर तक पहुंची। परमेश्वर ने उनका कराहना सुना, और परमेश्वर ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के साथ बान्धी हुई अपनी वाचा को स्मरण किया।' (निर्गमन 2:23-25 *NRSV*)।

परिचय

भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, आत्मिक या वित्तीय हिंसा के खतरे और/या वास्तविक उपयोग पर आधारित है। जब लोग गुलामी से होकर गुजरते हैं, तब उनका शोषण किया जा रहा होता है। इसका मतलब यह है कि दूसरे व्यक्ति द्वारा अपने स्वार्थी हित और लाभ के लिए उनके साथ गलत व्यवहार किया जा रहा है।

जिन लोगों को गुलाम बनाया जाता है उन्हें अमानवीय बना दिया जाता है और उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है मानो वह कोई वस्तु हों। उनकी पहचान और चुनाव करने की क्षमता उनसे छीन ली जाती है। उनके जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं। उन्हें अपनी आशाओं, सपनों, प्रियजनों, अपने अतीत और अपने भविष्य का त्याग करने के लिए मजबूर किया जाता है। अगर उन्हें उनके काम के लिए भुगतान किया जाता है, तो यह मुश्किल से जीवित रहने के लिए पर्याप्त होता है। यह उनसे उनकी आजादी छीन लेता है और उनके मानवाधिकारों का उल्लंघन है।

फिरौन का गुलाम होने के नाते, यूसुफ ने कई कठिनाइयों, पीड़ा और अत्याचार का अनुभव किया। फिर भी, परमेश्वर के पास यूसुफ के जीवन के लिए एक उद्देश्य था। परमेश्वर ने यूसुफ को उसके संघर्षों से छुड़ाया और उसे मिस्र में नेतृत्व के उच्चतम स्तरों तक पहुँचाया। अकाल के समय यूसुफ ने अपने भाइयों को क्षमा किया और उन्हें मिस्र में बसने में सहायता की। यूसुफ की मृत्यु के बाद और एक नया फिरौन सत्ता में आया, मिस्र के लोग अपने देश में इब्रानियों की तेजी से बढ़ती संख्या से घबरा गए थे और इस 'समस्या' को हल करने के लिए, जानबूझकर किसी भी इब्रानी नवजात पुरुष को मारने की

फिराक में रहने लगे।

लेकिन परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और मूसा को अपने उद्देश्य के लिए बचा लिया। यह देखते हुए कि इस्राएली अभी भी तेजी से संख्या में बढ़ रहे थे, मिस्रियों ने उन्हें जबरन श्रम – गुलामी में धकेल दिया। भले ही इस्राएली मिस्र के नागरिक बन गए थे और उस देश के निर्माण और सुधार के लिए काम कर रहे थे, परन्तु तब भी उन्हें मनुष्य नहीं माना जाता था और उनके अधिकार उनसे छीन लिए गए थे। वह उत्पीड़ित थे – उनका जीवन अन्याय की कठिनाइयों, असमानता, दर्द और कड़वाहट से भरा था। फिरौन की ताकत को चुनौती देने या न्याय के लिए लड़ने वाला कोई नहीं था। अपने दर्द और कड़वाहट के मध्य, वह 'गुलामी में कराहए, और परमेश्वर की दोहाई दी' (निर्गमन 2:23)।

निर्गमन 2:24–25 अपने लोगों की पुकार के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया का वर्णन करता है। उनकी प्रतिक्रिया का उल्लेख तीन छोटे वाक्यांशों में किया गया है: उसने उनकी पुकार सुनी; उसने अपनी वाचा को स्मरण किया; उसे उनकी चिंता थी। आइए इनमें से प्रत्येक प्रतिक्रिया पर रौशनी डालें।

परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी

न्यू इंटरनेशनल वर्जन में, निर्गमन 2:23 में प्रयुक्त शब्द 'ग्रोन' 'पुकारने' के विचार से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। यह शब्द 'कराहना' पुराने नियम में केवल तीन अन्य जगह प्रयोग किया गया है: निर्गमन 6:5, न्यायियों 2:18 और यहेजकेल 30:20। इस्राएली उस शारीरिक कष्ट के कारण कराह रहे थे और दोहाई दे रहे थे जो उनके सामूहिक जीवन में श्रम गुलामी की स्थिति उत्पन्न कर रही थी। उस समय इब्रानियों के पास कोई अगुवा नहीं था – जिसके पास वे जा सकें। वह पूरी तरह से असहाय और निराश थे। केवल एक चीज जो वे कर सकते थे वह था परमेश्वर को पुकारना। मदद के लिए उनकी पुकार किसी बुतपरस्त ईश्वर के पास नहीं बल्कि इस संसार और सारी मानवता के सृजनहार के पास पहुंची। उनकी पुकार उनके पूर्वजों के परमेश्वर तक पहुँची और परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में, हम सीखते हैं कि कैसे परमेश्वर अपने सभी लोगों की पुकार सुनता है।

1 पतरस 3:12 कहती है, "क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।" (हिंदी ओल्ड वर्जन)।

भजन संहिता 50:15 कहती है, "और संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।'

भजन संहिता 34:17 कहती है, 'धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है।' पवित्रशास्त्र के यह विशिष्ट अंश और कई अन्य हमें बताते हैं कि हमारा परमेश्वर अपने लोगों की पुकार सुनता है। उसने जंगल में हाजिरा और बहुत सी अन्य लोगों की पुकार सुनी। उसने हाजिरा और अन्य लोगों से उनकी कठिन परिस्थितियों में मुलाकात की और उन्हें बचाया। वही परमेश्वर आज भी गुलामी का अनुभव कर रहे सब लोगों की पुकार को सुनता है। उसकी इच्छा है कि वह उनकी आवाज को सुने और जहाँ भी वह हैं उनसे मुलाकात करें।

परमेश्वर ने अपनी वाचा को स्मरण किया

परमेश्वर ने न केवल सुना बल्कि उस वाचा को जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ बान्धी थी, उसको स्मरण या उस पर विचार भी किया (निर्गमन 2:24)। हिब्रू में 'स्मरण किया' शब्द 'जकार' है, जो निर्गमन की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक विषय है। हिब्रू में, स्मरण करना केवल एक बौद्धिक व्यायाम नहीं है बल्कि इसमें उस स्मृति पर कार्य करना भी शामिल है। परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों के साथ बिना शर्त प्रतिज्ञाएँ की थी। मनुष्यों के विपरीत, परमेश्वर विश्वासयोग्य है। वह अपने द्वारा किए गए वायदों को

भूलता नहीं है। वह उन्हें पूरा करेगा भले ही हमें लगे कि ऐसा करने में उसे काफी समय लग रहा है। 'अपने समय में, वह सभी चीजों को सुंदर बनाता है अपने समय में', यह सुंदर पंक्तियाँ हमें याद दिलाती हैं कि जब उसका समय आता है, तो वह अपने बच्चों को स्मरण करता है। वह कभी भूलता नहीं है। भजन संहिता 105:8 आयत बताती है कि वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है, यह वही वचन है जो उसने हजार पीढ़ियों के लिए ठहराया है।' वह पीढ़ी दर पीढ़ी अपने बच्चों को स्मरण रखता है। वह उन सभी को स्मरण करता है जो पीड़ित हैं और गुलामी से गुजर रहे हैं। परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो लोगों को सभी प्रकार के बंधनों से छुड़ाता है और सम्पूर्ण उद्धार लाता है।

परमेश्वर चिंतित था।

परमेश्वर ने न केवल इस्राएलियों का कराहना और चिल्लाहट सुनी और अपनी वाचा को स्मरण किया, बल्कि वह इस्राएलियों की चिन्ता भी करता था। इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों की दुर्दशा से अनजान नहीं था और न ही उन्हें गुलामी से बचाने के लिए अनिच्छित था। वह उन्हें मिस्र की गुलामी से बचाने के लिए कुछ करने की योजना बना रहा था। सुनने, स्मरण करने और चिंतित होने की ये क्रियाएं उसकी रचना के प्रति उसकी वफादारी और करुणा के संकेत थे।

जैसा कि भजन संहिता 146:6-9 में कहा गया है, "वह आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उनमें जो कुछ है, सब का कर्ता है; और वह अपना वचन सदा के लिये पूरा करता रहेगा। वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है; और भूखों को रोटी देता है। यहोवा बन्दियों को छुड़ाता है; यहोवा अन्धों को आँखें देता है। यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है; यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है। यहोवा परदेशियों की रक्षा करता है; और अनाथों और विधवा को तो सम्भालता है; परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा करता है।"

जैसे-जैसे हम प्रार्थना के समय में प्रवेश करते हैं और अपने प्रार्थना स्टेशनों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, मैं इस बात पर पर्याप्त जोर नहीं दे सकता कि जब हम निर्गमन की शुरुआत को पढ़ते हैं और निर्गमन 2:23-25 में देखते हैं कि परमेश्वर गुलामी, मानव तस्करी और शोषण को स्वीकार नहीं करता है। हमारा परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो इस अन्याय का अनुभव करने वाले सभी लोगों की दोहाई को सुनता है, स्मरण करता है और चिंता रखता है। प्रत्येक व्यक्ति उसके स्वरूप में बनाया गया है और हर दृष्टि से स्वतंत्र रहने के लिए रचा गया है। उसकी इच्छा लोगों को इन अन्यायों के अंधेरों से निकालकर अपने प्रकाश में लाना है। आइए प्रार्थना के लिए समय निकालें जबकि हम गुलामी, मानव तस्करी और शोषण का सामना कर रहे सभी लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा और प्रतिउत्तर की तलाश में प्रार्थना स्टेशनों से होकर गुजरते हैं।

'वह उन सभी को **स्मरण** करता है जो पीड़ित हैं, और गुलामी से गुजर रहे हैं। परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर, है जो **लोगों को** सभी प्रकार के बंधनों से छुड़ाता है।'